कृषिवानिक - विधियां एवं विकास विषय पर

कृषक प्रशिक्षण - सह - कार्यशाला

दिनांक: 8 सितम्बर 2025

भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा दिनांक 08.09.2025 को डेमो विलेज के अंतर्गत **"कृषिवानिक - विधियां एवं विकास"** विषय पर एक दिवसीय **कृषक प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला** का सफल आयोजन ग्राम हैसी, बाबूपुर, प्रतापगढ़ में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय को कृषिवानिक, पर्यावरण संरक्षण एवं आजीविका के संवर्धन हेतु प्रेरित करना था। मुख्य अतिथि डॉ. संजय सिंह, केन्द्र प्रमुख, भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज ने बताया कि यह कार्यक्रम न सिर्फ वनों की महत्ता को उजागर करता है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में एक सार्थक प्रयास भी है।

कार्यक्रम दो सत्रों मे संपन्न हुआ। उद्घाटन सत्र और तकनीकी सत्र। तकनीकी सत्र में विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न कृषिवानिक विषयों पर विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा कार्यक्रम की रूप रेखा से अवगत कराया गया साथ ही कृषिवानिकी के अंतर्गत वृक्ष आधारित चारे का प्रयोग दीर्घकालिक, टिकाऊ एवं लाभकारी विकल्प है, जो पशुपालन और कृषि दोनों को मजबूती प्रदान करता है। उन्होंने पॉप्लर वृक्ष आधारित कृषिवानिक पर बाल दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव द्वारा बाँस की आवश्यक प्रजातियों को लगाने एवं उनके उपयोग पर प्रकाश डाला गया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम का सफल संचालन किया गया। उन्होंने गम्हार, यूकेलिप्टस, मीलिया डूबीया तथा अन्य वृक्ष प्रजातियों के रोपण से पर्यावरण सुधार एवं आजीविका वृद्धि में कृषिवानिकी के महत्त्व पर विस्तृत चर्चा किया गया।

कार्यक्रम में स्थानीय किसानों, ग्रामवासियों, छात्र-छात्राओं और स्वयंसेवी संगठनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा पर्यावरण सुधार एवं आजीविका वृद्धि हेतु वृक्षारोपण की तकनीक, औषधीय पौधों की खेती, बांस एवं अन्य वन उत्पादों के व्यावसायिक उपयोग पर जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

आयोजन स्थलः डेमो विलेज, बाबूपुर, प्रतापगढ़

आयोजक: भा.वा.अ.शि.प. पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज

कृषक प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला

कृषक प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला
कृषिवानिकी-विधियाँ एवं विकास
(डेमो विलेज के अन्तर्गत, कैम्पा वित्त पोषित)

कृषक प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला
कृषिवानिकी-विधियाँ एवं विकास
(डेमो विलेज के अन्तर्गत, कैम्पा वित्त पोषित)

NIP 09 September 2025.pd

Organizing Farmer Training - cum - Workshop

Staff Reporter

Prayagraj: ICFRE-ERC-Ecological Methods and Development Restoration Center, Prayagraj successfully organized a one-day farmer training-cum-workshop on the subject of agroforestry - methods and development under Demo Village on Monday in village Hasi, Babupur, Pratapgarh. The objective of the program was to motivate the rural community for forestry, environmental protection and livelihood promotion. Chief Guest Dr. Sanjay Singh, Center Head, ICFRE-ERC - Ecological Restoration Center, Prayagraj said that this program not only highlights the importance of forests, but is also a meaningful effort towards strengthening the rural economy.

Senior scientist Dr. Anita Tomar informed about the outline of the program and also said that the use of tree-based fodder under agroforestry is a long-term, sustainable and beneficial option, which strengthens both animal husbandry and agriculture. She mainly stressed on planting trees like Subabul, Sesbania, Drumstick, Babul etc. for tree-based fodder. Senior scientist Dr. Alok Yadav threw light on planting essential species of bamboo and their use. The program was successfully conducted by senior scientist Dr. Anubha Srivastava. He discussed in detail the importance of agroforestry in improving the environment and increasing livelihood by planting Gamhar, Eucalyptus, Milia Dubia and other tree species.

Local farmers, villagers, students and voluntary organizations participated enthusiastically in the program. Senior scientists of the center provided information on tree plantation techniques for environmental improvement and livelihood enhancement, cultivation of medicinal plants, commercial use of bamboo and other forest products.

Organizing Farmer Training – cum – Workshop

By admin

SEP 8, 2025

PRAYAGRAJ: ICFRE-ERC-Ecological Methods and Development Restoration Center, Prayagraj successfully organized a one-day farmer training-cum-workshop on the subject of agroforestry – methods and development under Demo Village on Monday in village Hasi, Babupur, Pratapgarh. The objective of the program was to motivate the rural community for forestry, environmental protection and livelihood promotion. Chief Guest Dr. Sanjay Singh, Center Head, ICFRE-ERC – Ecological Restoration Center, Prayagraj said that this program not only highlights the importance of forests, but is also a meaningful effort towards strengthening the rural economy. Senior scientist Dr. Anita Tomar informed about the outline of the program and also said that the use of tree-based fodder under agroforestry is a long-term, sustainable and beneficial option, which strengthens both animal husbandry and agriculture. She mainly stressed on planting trees like Subabul, Sesbania, Drumstick, Babul etc. for tree-based fodder. Senior scientist Dr. Alok Yadav threw light on planting essential species of bamboo and their use. The program was successfully conducted by senior scientist Dr. Anubha Srivastava. He discussed in detail the importance of agroforestry in improving the environment and increasing livelihood by planting Gamhar, Eucalyptus, Milia Dubia and other tree species. Local farmers, villagers, students and voluntary organizations participated enthusiastically in the program. Senior scientists of the center provided information on tree plantation techniques for environmental im[...] and livelihood enhancement, cul[...] of medicinal plants, commercial use of bamboo

urnewsbox.com — Private

कार्यशाला में बताया गया पौधों का महत्व

प्रतापगढ़। कृषक प्रशिक्षण सहकार्यशाला का आयोजन सोमवार को विकास खंड मानधाता के हैंसी-बाबूपुर में हुआ। पारिस्थितिक विधियां एवं विकास पुनर्स्थापन केंद्र प्रयागराज की ओर से आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि कृषिवानिकी न केवल वनों की महत्ता को रेखांकित करती है बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने का माध्यम भी है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने वृक्ष आधारित चारे की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने सहजन, बबूल के पौधे लगाने की सलाह दी। डॉ. आलोक यादव ने बांस की प्रजातियों के रोपण और उपयोग के बारे में बताया। डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने गम्हार, यूकेलिप्टस, मीलिया डूबीया समेत अन्य पेड़ों के प्रजातियों के महत्व पर चर्चा की। कार्यशाला में किसान, ग्रामवासी, छात्र-छात्राएं और स्वयंसेवी संगठन शामिल रहे।